मनसा सेवा - 97

अव्यक्त बापदादा :- (17/03/2007)

➳ _ ➳ बापदादा की समय प्रमाण अभी हर बच्चों के प्रति चाहे नम्बरवार हैं, बापदादा जानते हैं लेकिन नम्बरवार में भी तीव्र पुरुषार्थ सदा रहे उसकी आवश्यकता है। समय सम्पन्न होने में तीव्रता से चल रहा है लेकिन अभी बच्चों को बाप समान बनना ही है, यह भी निश्चित ही है सिर्फ इसमें तीव्रता चाहिए। हर एक अपने को चेक करे कि मैं तीव्र पुरुषार्थी हूँ सदा? क्योंकि पुरुषार्थ में पेपर तो बहुत आते ही हैं और आने ही हैं लेकिन तीव्र पुरुषार्थी के लिए पेपर में पास होना इतना ही निश्चित है कि तीव्र पुरुषार्थी पेपर में पास हुआ ही पड़ा है। होना है नहीं, हुआ ही पड़ा है। यह निश्चित है।

➳ _ ➳ सेवा भी सभी अच्छी रूचि से कर रहे हैं लेकिन वापदादा ने पहले भी कहा है कि वर्तमान समय के प्रमाण एक समय पर मन्सा-वाचा और कर्मणा अर्थात चलन और चेहरे द्वारा तीनों की प्रकार की सेवा, मन्सा द्वारा अनुभव कराना, वाणी द्वारा ज्ञान के खजाने का परिचय कराना और चलन द्वारा सम्पूर्ण योगी जीवन का प्रैक्टिकल रूप का अनुभव कराना, तीनों ही सेवा एक समय करनी है। अलग-अलग नहीं, समय कम है और सेवा अभी भी वहुत करनी है।

➳ _ ➳ वापदादा ने देखा कि सवसे सहज सेवा का साधन है वृत्ति द्वारा वायवेशन वनाना और वायवेशन द्वारा वायुमण्डल वनाना क्योंकि वृत्ति सवसे तेज साधन है। जैसे साइंस की राकेट फास्ट जाती है वैसे आपकी रूहानी शुभ भावना शुभ कामना की वृत्ति, दृष्टि और सृष्टि को बदल देती है। एक स्थान पर बैठे भी वृत्ति द्वारा सेवा कर सकते हैं। सुनी हुई बात फिर भी भूल सकती है लेकिन जो वायुमण्डल का अनुभव होता है, वह भूलता नहीं है।

➳ _ ➳ जैसे मधुबन में अनुभव किया है ब्रह्मा बाप की कर्मभूमि, योग भूमि, चरित्र भूमि का वायुमण्डल अब तक जो भी वायुमण्डल का अनुभव करते हैं वह भूलता नहीं हैं। वायुमण्डल का अनुभव दिल में छप जाता है। तो बड़े-बड़े वाणी द्वारा प्रोग्राम तो करते ही हो लेकिन हर एक को अपनी श्रेष्ठ रूहानी वृति से, वायब्रेशन से वायुमण्डल बनाना हैं, लेकिन वृत्ति रूहानी और शक्तिशाली तब होगी जब अपने दिल में, मन में किसी के प्रति भी उल्टी वृत्ति का वायब्रेशन नहीं होगा।

➢➢ तीव्र पुरुषार्थ में पेपर, बाधा/ विघ्न

➳_ ➳ शरीर

→ कितना भी उमंग उत्साह हो, शरीर ही साथ न दे तो क्या करें?

→ शरीर जब बीमार होता है तो आत्मा को भी अपनी तरफ खींचता है...

→ तेज बुखार में आत्मा स्वरूप का अभ्यास कुछ मुश्किल हो जाता है...

→ दर्द, लम्बे समय की बीमारी भी पुरुषार्थ में विघ्न बन जाती है...

➳_ ➳ समय

→ तीव्र पुरुषार्थ हर एक करना चाहता है, लेकिन समय कैसे निकाले...

■ अच्छे पुरुषार्थ के लिए अच्छा समय देना होगा...

■ कम समय में तीव्र पुरुषार्थ हो न सके...

▶ ज्ञान, मनन, चिन्तन, अध्ययन, योग सबके लिए समय चाहिए...

▶ पुरुषार्थ के लिए बहुत सी इच्छाओं को छोड़ना पड़ता है... धन कमाने की, संसार की इच्छाएं...

▶ रात को 11-12 बजे सोकर अमृतवेला शक्तिशाली कैसे होगा...

➳_ ➳ साथी

→ जूनियर

→ सीनियर

→ सेवा साथी

■ सबके बीच में रहना है, पर देखना है कि इनके ही बीच में तीव्र पुरुषार्थ कैसे करें...

▶ ये मार्ग हर एक को खुद निकालना होगा...

➳_ ➳ Directionlessness

→ मुरलियां, अव्यक्त वानियाँ पढ़ी, पर उसमे से करना क्या है...

→ एक सूक्ष्म दिशाहीनता है...

→ कैसे करें, यह प्रश्न रह जाता है...

■ सारी बातें पता है, उसमे विशेष मेरे लिए क्या है, ये हर एक को खुद ही ढूँढना होगा..

▶ हर एक को अपनी दिशा खुद ही निर्धारित करनी है...

▶ मेरी परिस्थिति में मुझे क्या करना है...

➳_ ➳ उदासी, सूक्ष्म डिप्रेशन

→ पुरुषार्थ में करना बहुत कुछ है पर ही नहीं रहा... इस बात की उदासी, अवसाद का भाव है...

■ इस उदासी का जन्म हो रहा है तुलना से...

■ हम हर बात में खुद को compare कर रहे हैं...

▶ मैं यूनिक हूँ...

▶ बाबा ने कहा है कि हर आत्मा विशेष है...

▶ जो विशेषता मुझ में है, किसी में नहीं है...

■ अपने प्रति, अपने गुणों के प्रति हीन भावना आ जाती है...

▶ हम क्यों भूल जाते हैं कि हर एक व्यक्ति यूनिक है...

➳_ ➳ आलस्य/ Laziness

→ पुरुषार्थ करना है पर

■ कर लेंगे...

■ मूड नहीं है...

■ शरीर का आलस्य है... अज्ञात है ये आलस्य...

▶ कौन उठायेगा, बाहर निकालेगा हमे इस आलस्य से...

▶ शायद अपने ही अंदर बीज है इसका...

➳_ ➳ Limitation

→ हर एक की अपनी अपनी Limitation हैं...

■ शरीर की Limitation

■ बुद्धि की Limitation

■ समय की Limitation

▶ अपनी Limitation को पहचानना, साथ ही उस पर काम करना...

▶ हमारे अंदर अनंत शक्तियां हैं... असीम क्षमताएं हैं... हम ही अनभिग्य हैं उनसे...

➢➢ हमें अपनी दिशाहीनता, भटकाव से बाहर निकलना है...

➢➢ अपने डिप्रेशन के कारण खुद ही देखने हैं..

➢➢ अपनी Limitation को जानके उस पर काम करना है...

➢➢ वृत्ति

➳_ ➳ वायुमंडल बनाने का सबसे तेज साधन है वृत्ति..

→ वृत्ति का निर्माण संकल्पों से होता है..

→ क्या इम्प्रेशन पद रहे हैं आत्मा पर, उस पर ध्यान देना है...

■ वृत्ति को श्रेष्ठ बनाना है...

■ किसी भी आत्मा के प्रति हमारी वृत्ति नेगेटिव न हो जाये..

▶ अपने ही मन में उस पर काम करना है...

▶ मन की थोड़ी सी दिशा बदलने की जरूरत है...

▶ किसी के लिए मन में नेगेटिव भाव है, उसकी किसी एक अच्छी बात का दस मिनट भी चिंतन किया जाये, तो वह भाव छिप जायेगा...